Date- 21/8/2020

Sanskrit (Honours)
B.A. (Final Part)

डॉ० लक्ष्मी जी (M.Phil)
अतिथि विद्वान
विभाग - संस्कृत
आ०सी० एम० कॉलेज, मेमारी
बर्दवान

लघुसिद्धान्तकौमुदी (अजन्तस्त्रीप्रत्यय).

ङीप् ङीबन्त्य (सूत्र) - 'इयङुवङ्स्थानौ स्त्रीशब्दस्य ङीप् नित्यस्त्रीलिङ्गविहितौ, ङ्यौ च इयणौवणौ स्त्रियां वा नदीसंज्ञौ स्तो ङिति' अर्थात् 'इयङ्' एवं 'उवङ्' के स्थान, स्त्री शब्द से ङित् तथा नित्य-स्त्रीलिंग दीर्घ ईकार, ऊकार तथा ह्रस्व इकार, उकार विकल्प से नदी संज्ञक होते हैं ङित् विभक्ति (ङे, ङसि, ङस्, ङि) पर रहते।

अर्थात् एते इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त एवं ऊकारान्त शब्दों की विकल्प से नदी संज्ञा होती है जिससे इयङ् एवं उवङ् की प्राप्ति भी हुई है, परन्तु उनका निषेध भी हो गया है।

मत्यै, मतये - 'मन्' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय होने पर 'मति' शब्द की निष्पत्ति होती है फिर कृत-तद्धितसमासान्त सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'इयाप्प्रातिपदिकात्' सूत्र के द्वारा स्त्रीत्वविवक्षा में सूत्र से चतुर्थी विभक्ति के एकवचन में 'ङे' प्रत्यय होने पर ङित् (ङे) पर में होने

के कारण 'डिति ह्रस्वश्च' सूत्र के विकल्प से नदी संज्ञा होने पर तथा 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इसकी इत्संज्ञा एवं 'तस्य लोपः' सूत्र से उसके लोप होने पर 'मति ए' इस स्थिति में नदी संज्ञक होने के कारण 'आण्नद्याः' सूत्र 'ङे' परे होने कारण 'आट्' का आगम होने तथा टित् होने के कारण 'आद्यन्तौ टकितौ' सूत्र के विधान अनुसार 'ङे' के पहले आट् का आगम होने तथा 'हल्ङ्याब्भ्यः' सूत्र से इसकी इत्संज्ञा एवं 'तस्य लोपः' सूत्र से उसके लोप होने पर 'मति आ ए' इस स्थिति में 'आटश्च' सूत्र से 'आ' एवं 'ए' को मिलाकर वृद्धि होने तथा इसी प्रकार सूत्र से इसका यण् होने पर 'मत्यै' यह रूप सिद्ध होता है।

'डिति ह्रस्वश्च' सूत्र से नदीसंज्ञा के अभाव में 'वृद्धिरेचि' सूत्र से मति शब्द की 'एचि' संज्ञा होने पर 'वृद्धिरेचि' सूत्र से डित् (ङे) परे रहते इसका या इसका गुण होने पर 'मते ए' इस स्थिति में 'एचोऽयवायावः' सूत्र से 'ए' को 'अय्' होने पर 'मतये' यह रूप बनता है।

Rubina Rani
21/8/2020